यह समझना कि बच्चे कब और कैसे सीखते हैं

रितिका गुप्ता

एक शिशु अपने हाथ को उत्सुकता से देख रहा है,उसे हिलाता है,उसे अपने मुँह के पास लाता है और अपनी उँगलियों को चूसता है। फिर वह अपनी उँगलियों को मुँह से बाहर लाता है; अपने हाथ को पुनः देखता है और किलकारी मारता है। दो साल का एक बच्चा अपनी बड़ी बहन की कही हुई हर बात को दोहरा रहा है और खिलखिला रहा है। चार साल का एक बच्चा रेत में बैठा हुआ है, वह एक कटोरी में रेत भरता है और फिर उसे खाली करता है। पाँच साल का एक बच्चा अपने हाथ में एक खेलने वाला हथौड़ा लिए हुए घर में चारों ओर घूमते हुए अलग-अलग चीज़ों को ठोक-पीट रहा है और अपनी माँ को देख रहा है। छह साल की एक बच्ची घर में अपनी माँ के पीछे-पीछे इस तरह से घूम रही है मानो वह माँ की पूँछ हो। तेरह साल के दो बच्चे एक-दूसरे के पास बैठे हैं और ब्लॉक्स के साथ खेल रहे हैं। सोलह वर्षीय एक लड़का गेंद को अपने पैरों से बार-बार दीवार पर मार रहा है।

अक्सर बच्चे ऐसी गतिविधियाँ करते हैं जो बड़ों को निरर्थक लगती हैं। आमतौर बड़े इस तरह की टिप्पणी करते हैं कि,'ओह, वह तो ख़्याली पुलाव पका रहा है', 'खेल रहा है' या 'बस, समय बर्बाद कर रहा है।' हमें लग सकता है बच्चा उपर्युक्त स्थितियों में भला क्या सीख रहा होगा? जब हम सीखने के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में ख़ुद-ब-ख़ुद ऐसे बच्चे का चित्र बन जाता है जो किताबों के साथ गम्भीरता से बैठा हुआ हो, गृहकार्य कर रहा हो, किसी वयस्क की बात सुन रहा हो या याद किए हुए किसी अंश को दोहरा रहा हो। लेकिन कभी-कभी ख़ुद को यह याद दिलाना ज़रूरी है कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है,न कि केवल एक परिणाम।

मनुष्य का स्वभाव जन्म से ही जिज्ञासु और खोजी होता है। छोटे वैज्ञानिकों की तरह बच्चे, यहाँ तक कि शिशु भी, ज्ञान की खोज और उसका निर्माण करने के लिए प्रयोग करते रहते हैं। उदाहरण के लिए एक साल का बच्चा जो अपनी पहुँच के भीतर की सभी चीज़ें फेंकता रहता है, वह सीख रहा होता है कि कौन-सी वस्तु गिरते समय आवाज़ करती है और कौन-सी नहीं; जब वह उन्हें विभिन्न ऊँचाइयों से फेंकता है, तब क्या होता है। बच्चे अपने परिवेश के साथ लगातार कार्य करते रहते हैं,यह जानने के लिए कि दुनिया कैसे काम करती है।

बच्चे कैसे सीखते हैं?

- *अवलोकन* - घर में अपनी माँ का अनुसरण करने वाली छह वर्षीय बच्ची गौर से यह देख रही होती है कि 'माँ कैसे बने'। शायद वह घर-घर खेलते हुए इस आचरण को दोहराती नजर आएगी।
- *अनुकरण* - अपनी बहन की नकल करने वाला दो साल का बच्चा भाषा के नियमों और हँसी-खेल की सीमाओं के बारे में सीख रहा होता है।
- *प्रत्यक्ष स्वयं खोजबीन करके सीखना* – पाँच साल का बच्चा लगातार अपनी माँ की ओर उसकी इस प्रतिक्रिया को जानने के लिए देखता रहता है कि वह कहाँ-कहाँ हथौड़ा मार सकता है और कौन-सी चीज़ इस ठोकने-पीटने की सीमा से बाहर है। साथ ही वह यह भी सीख रहा होता है कि विभिन्न सतहों पर हथौड़ा मारने से किस प्रकार की विभिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।
- *प्रयोग; प्रयत्न-त्रुटि विधि*- चार साल का बच्चा जो कटोरी में रेत भर रहा है और फिर उसे खाली कर रहा है, वह खाली और पूर्ण की अवधारणाओं के बारे में सीख रहा है और अपनी गतियों का समन्वय करना सीख रहा है।
- *सीखने में पर्यावरण की भूमिका* - बच्चे अपने जीवन में अन्य लोगों से सीखते हैं; सम्भव है कि तेरह साल के दो बच्चे अवलोकन करते हुए एक-दूसरे से कोई कौशल सीख रहे हों।
- *चिन्तनशील विचार* – इन सभी उदाहरणों में,चिन्तन करने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। भले ही ऐसा न लगे,लेकिन बच्चे अपने सीखने के बारे में,कारण और प्रभाव के बारे में और उन चीज़ों के बारे में लगातार सोच रहे होते हैं जिन्हें वे अपने परिवेश में देखते हैं।

स्कूलों में सीखना

ऐसा लगता है कि हम सभी सीखने की इच्छा के साथ पैदा हुए हैं। तो फिर सीखना कब और कैसे एक कार्य बन जाता है? हम यह क्यों मान लेते हैं कि कुछ बच्चे सीखने में असमर्थ हैं?

उस समय के बारे में सोचिए जब आपने तैरना या साइकिल चलाना सीखा था। क्या किसी ने आपको वह तकनीक सिखाई? क्या आपने किसी और को देखा और नकल करने की कोशिश की? क्या आपने समय के साथ-साथ प्रयोग किए और पानी में तैरने या साइकिल को सन्तुलित करने के लिए अपने ख़ुद के तरीक़े निकाले?

हम सभी में सीखने की क्षमता है,लेकिन हम अलग-अलग तरीक़ों से सीखते हैं। सीखने के कुछ तरीक़ों को लेकर हमारे मन में स्वाभाविक प्राथमिकताएँ होती हैं और हममें से प्रत्येक के सीखने की एक अलग गति है। कभी-कभी हम अपने काम करने के तरीक़े में वे तरीक़े भी जोड़ लेते हैं जिन्हें हमने दूसरे को करते हुए देखा हो। अब एक कक्षा का उदाहरण लेते हैं। गणित में भिन्न के बारे में पढ़ने के दौरान कुछ बच्चे तो इसे तुरन्त सीख लेते हैं जबकि कई अन्य बच्चों को यह समझ में नहीं आता है। कुछ बच्चों को सवाल हल करने के लिए भौतिक रूप से ब्लॉक्स देने से लाभ होता है जबकि कई अन्य ख़ुद ही सवाल पढ़कर उसे हल करना पसन्द करते हैं।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम केवल परिणाम के आधार पर सीखने को मापते हैं और प्रक्रिया को स्वीकार नहीं करते हैं। जब हम सफलता या असफलता को केवल इस आधार पर मापते हैं कि बच्चा सवाल को हल कर सकता है या नहीं तो हम अन्य महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं पर ध्यान देने से चूक जाते हैं:

- हम यह मानने लगते हैं कि कुछ बच्चे सीख सकते हैं और कुछ नहीं। इसके लिए हम कभी-कभी कुछ कारण भी मानकर चलते हैं, जैसे कि बच्चा बहुत शरारती है,उसके घर का माहौल अच्छा नहीं है, वह बुद्धिमान नहीं है या उसमें सीखने के लिए आवश्यक एकाग्रता की कमी है।
- हो सकता है कि हम समय के साथ-साथ होने वाले अधिगम को मापना भूल जाएँ क्योंकि विभिन्न बच्चे विभिन्न गति से सीखते हैं।
- जब हमारा दिमाग़ परिणाम पर केन्द्रित होता है तो हो सकता है कि हम प्रकरण विशेष के उन अंशों पर ध्यान देने से चूक जाएँ जिसे बच्चा समझ गया है। उदाहरण के लिए बच्चा दैनिक जीवन की बातचीत में भिन्न की अवधारणा को समझता है – 'मुझे आधी चॉकलेट दीजिए, इस चॉकलेट को आप तीनों में समान रूप से बाँट लीजिए'- लेकिन वह इसे संख्याओं में समझने में असमर्थ है। यह अवलोकन कक्षा में वाकई सहायक हो सकता है क्योंकि अगर हम यह समझ सकें कि बच्चा क्या समझता है और कहाँ अटक रहा है तो इससे हमें अपनी शिक्षण-शैली और विषय-सामग्री के अनुकूलन के बारे में जानकारी मिलेगी।

अधिगम को कक्षा में ले जाना

एक कक्षा में बहुत सारे बच्चे होते हैं तो ऐसे में शिक्षक सभी की सीखने की गति का ध्यान कैसे रख सकता है? साथ ही स्कूल में शिक्षकों को आकलन करना पड़ता है जिसके लिए परिणामों को मापना आवश्यक होता है। इस जानकारी का उपयोग कक्षा में कैसे किया जा सकता है? इस सीख को कक्षाओं में कैसे ले जाया जा सकता है, इसके कुछ उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं:

अपनी मान्यताओं को बदलना

बच्चे बहुत बारीक़ी से अवलोकन करते हैं और ग़ैर-मौखिक संकेतों को समझने में वयस्कों की तुलना में कहीं अधिक कुशल होते हैं। वे समझ सकते हैं कि शिक्षक को लगता है कि 'मैं बेवकूफ हूँ',भले ही इसे शब्दों में व्यक्त न किया गया हो। यह बात उसके आत्मसम्मान को कम करके उसके अधिगम में रुकावट डाल सकती है; बच्चा यह मानने लगता है कि 'मैं यह कार्य नहीं कर सकता; मैं स्मार्ट नहीं हूँ।' हो सकता है कि ऐसा मानने के कारण बच्चे शरारतें करना शुरू कर देते हों; या कक्षा में अच्छा प्रदर्शन न कर पाने के कारण हताशा से वे ऐसा व्यवहार करते हों या यह भी हो सकता है कि वे मानते हों कि 'मैं अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकता और लोकप्रिय नहीं हो सकता, इसलिए मैं हर किसी को परेशान करके ही लोकप्रिय बनूँ।'

बच्चे की क्षमताओं में शिक्षक के विश्वास का बच्चे पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चा यह समझ लेता है कि,'शिक्षक को लगता है कि मैं यह कार्य कर सकता हूँ।' इसके अलावा जब शिक्षक यह मानते हैं कि कक्षा का प्रत्येक बच्चा सीख सकता है, तो उनके अपने व्यवहार में स्वत: परिवर्तन होता है। यह बदलाव, अपने आप में, बच्चों के लिए बहुत सुकून देने वाला और उत्साहवर्धक होता है।

आइए, इसका एक उदाहरण देखें। यह रायपुर के एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका का अनुभव है। सुश्री गायत्री प्राथमिक स्कूल के बच्चों को पढ़ाती थीं और उन्हें अक्सर लगता था कि 'यह बच्चे पर्याप्त रूप से स्मार्ट नहीं हैं।' पहली और दूसरी कक्षा में भी विद्यार्थियों के पढ़ने और लिखने का स्तर काफी कम था। इससे वह हतोत्साहित महसूस करती थीं और कभी-कभी बच्चों पर गुस्सा भी हो जाती थीं। यहाँ उस

प्रशिक्षण सत्र के प्रभाव की एक रिपोर्ट दी गई है जिसमें उन्होंने भाग लिया था और जिसमें यह बताया गया कि छोटे बच्चों को कैसे पढ़ाना चाहिए :

'सुश्री गायत्री ने अपने शिक्षण में जो सबसे बड़ा बदलाव महसूस किया वह था, बच्चे कैसे सीखते हैं और वे क्या करने में सक्षम हैं, इस बारे में उनका दृष्टिकोण। यह जानने के बाद कि बच्चे अपने दम पर सीख सकते हैं, उनकी समझ में आने लगा किटी एल एम का उपयोग करने और बच्चों को विषय-सामग्री के बारे में खोज करने देने का क्या उद्देश्य है। अब वे इस ज्ञान का उपयोग बच्चों की प्राकृतिक जिज्ञासा को उजागर करने के लिए भी करने लगीं और बच्चों के ध्यान को बनाए रखने के लिए यह उपकरण बहुत उपयोगी साबित हुआ। अब वे विद्यार्थियों को डाँटने-फटकारने या सज़ा देने की बजाय उनके साथ बातचीत करने लगीं। यह बदलाव बहुत धीरे-धीरे हुआ और रैखिक नहीं था, लेकिन वे इस प्रक्रिया की आभारी हैं।

सुश्री गायत्री की अनुकूलित शिक्षण पद्धति के बाद बच्चों के सीखने और भागीदारी के स्तर में तत्काल फ़र्क देखने को मिला। धीरे-धीरे पहली कक्षा के बच्चों ने पढ़ना शुरू कर दिया, कक्षा में उनकी अन्तःक्रिया में वृद्धि हुई और ऐसा लगा कि वे पहले से कहीं अधिक समझने लग गए हैं। सुश्री गायत्री ने बताया कि उन्हें भी कक्षाएँ अधिक आनन्ददायक लगने लगी थीं। इतना ही नहीं, उनके स्कूल के अन्य शिक्षकों और अन्य स्कूलों के शिक्षकों ने भी वैसी ही विधियों को अपनाने की इच्छा व्यक्त की है।'[i]

बच्चे कैसे सीखते हैं – जब इस बारे में शिक्षक के विचार बदलते हैं तो उनके शिक्षण के तरीक़ों में भी स्वत: परिवर्तन हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि राधा यह मानती हैं कि बच्चे तभी सीखते हैं जब वे सब कुछ लिखें, तो वे कक्षा में बहुत सारा लेखन कार्य करवाएँगी। लेकिन अगर उन्हें लगता है कि बच्चे खोज करने के माध्यम से अच्छी तरह से सीखते हैं तो वे कक्षा में पज़ल, प्रयोग और मज़ेदार-तथ्य कोनों का उपयोग करेंगी।

अपनी शिक्षण शैली को बदलना

कभी-कभी जब कोई बच्चा सीख नहीं पाता तो इसका कारण यह नहीं है कि वह सीख नहीं सकता है, बल्कि कारण यह है कि उस बच्चे के लिए सिखाने का जो तरीक़ा अपनाया गया है वह उसके लिए ठीक नहीं है। इसलिए केवल अपनी शिक्षण शैली को बदलने और बच्चे के स्तर पर आने से उसकी मदद की जा सकती है। आगे दिए उदाहरण से यह बात स्पष्ट होती है। यह रिपोर्ट स्वलीनता (ऑटिज़्म) से पीड़ित तीन साल के एक बच्चे की है। वह बोलता नहीं था और न ही किसी का ध्यान या स्नेह चाहता था। उसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के स्कूल में लाया गया। इस रिपोर्ट में उन तीन महीनों के अनुभव बताए गए हैं जो उसे एक शिक्षक के साथ तीन महीने के सत्र में हुए।

पार्थ ने कुछ भी सीखने या किसी के बारे में भी जानने के लिए कोई प्रेरणा या जिज्ञासा नहीं दिखाई। यहाँ तक कि जब उसे स्कूल लाया जाता था तो वह शिक्षक के सामने बैठने से मना कर देता था। वह जाकर एक कोने में फर्श पर बैठ जाता और अपने-आप में व्यस्त रहता। उसने केवल एक चीज़ में थोड़ी दिलचस्पी दिखाई, वह थी सुपर हीरो कॉमिक्स। हालाँकि वह पढ़ना नहीं जानता था, फिर भी वह घर पर कुछ कॉमिक्स के पन्ने पलटता रहता था।

हफ्तों तक पार्थ का ध्यान खींचने में असफल रहने के बाद शिक्षक ने कक्षा में पार्थ की रुचि यानी कॉमिक्स का उपयोग करने का फैसला किया। शिक्षक ने पार्थ को सामने आकर बैठने के लिए मजबूर नहीं किया; बल्कि वे भी बैठकर कॉमिक्स के चित्र बनाने लगे। एक कॉमिक स्ट्रिप खत्म करने के बाद वे उसे पार्थ के पास रख आए और अपनी सीट पर लौटकर ड्राइंग जारी रखी। शिक्षक के इस भयरहित बर्ताव से पार्थ को प्रोत्साहन मिला। धीरे-धीरे, दो महीने तक कक्षा में आते रहने के बाद, पार्थ आकर शिक्षक के सामने बैठने लगा। जब शिक्षक चित्र बनाते तो वह चुपचाप देखता रहता; धीरे-धीरे वह चित्र की तरफ इशारा करने लगा और कुछ आवाज़ें निकालने लगा। शिक्षक ने पार्थ की रुचि को सफलतापूर्वक जाग्रत कर दिया था; वह सुरक्षित महसूस कर रहा था और अपने आप ही बातचीत करने लगा था। यह प्रवेश बिन्दु था जिसमें सफलतापूर्वक सम्पर्क स्थापित हो गया था; इसके बाद धीरे-धीरे शिक्षक अन्तःक्रिया बढ़ाने और उसके साथ विभिन्न तरीक़ों से जुड़ने में सक्षम हो पाए।

एक ऐसा बच्चा,जिसके बारे में सबने सोचा था कि वह सीखने में असमर्थ है, जिसे बिल्कुल रुचि नहीं है, अब आठ वर्ष का एक औसत बच्चा है जो दोस्तों के साथ खेलना पसन्द करता है और अपने परिवेश के बारे में जिज्ञासु है। अतः यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि अगर कोई बच्चा शिक्षक द्वारा अपनाए गए किसी एक तरीक़े से सीखने में विफल हो तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह सीखने में असफल रहा है।

रुचि और जिज्ञासा जगाना और उसे बनाए रखना

किसी बच्चे के अन्तहीन सवालों ने कभी आपको थकाया होगा तो आप जानते होंगे कि बच्चे सीखना चाहते हैं। वे जिज्ञासु होते हैं और बारीक़ी से अवलोकन करते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि कक्षा के सीखने का माहौल बच्चों की सीखने की इस स्वाभाविक इच्छा को दबा देता है। जॉन होल्ट ने अपनी पुस्तक 'हाउ चिल्ड्रन फेल' में लिखा है कि, 'बच्चों के

कक्षा में असफल होने का एक कारण यह है कि वे ऊब जाते हैं; स्कूलों में बच्चों से अक्सर बार-बार एक ही कार्य करवाए जाते हैं जिसमें उनकी विस्तृत क्षमताओं का उपयोग नहीं किया जाता है। इसलिए बच्चे की रुचि समाप्त हो जाती है और वह कक्षा के कार्यों के साथ जुड़ाव महसूस नहीं करता है।' (होल्ट एंड फ्रॉम, 1964)। और अक्सर इसका मतलब यह लगा लिया जाता है कि, 'यह बच्चा सीखने में असमर्थ है।'

फिर हम बच्चों की स्वाभाविक रुचि और जिज्ञासा को कैसे बनाए रख सकते हैं?

एक तरीक़ा यह है कि 'बच्चों को पढ़ाने'के अलावा, उन्हें ख़ुद भी अवधारणाओं का पता लगाने, खोजने, समझने और लागू करने दें। अवधारणाओं को बच्चे के परिवेश से जोड़ना, उन्हें सोचने के लिए उकसाना और सिखाई गई चीज़ों पर विचार करने देना – यह सारी बातें उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा और प्रेरणा का पोषण करती हैं। इन बातों को अपनाने वाली एक शिक्षिका की कक्षा का उदाहरण आगे दिया जा रहा है।

यह विवरण रायपुर के एक सरकारी माध्यमिक विद्यालय की सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका के बारे में है। सुश्री जोशी ने कहा कि बच्चों को अपनी पूरी क्षमता से काम करने के लिए स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। यद्यपि उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अधिगम के लिए बच्चों के साथ निरन्तर जुड़ाव आवश्यक है, लेकिन साथ ही वे स्वतंत्रता और खोजपूर्ण अधिगम की आवश्यकता को भी महत्त्व देती हैं। वे मानती हैं कि इसके लिए गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियाँ सहायक होती हैं जिनसे बच्चों को कक्षा में प्राप्त ज्ञान को अपने स्वयं के जीवन में लागू करने का मौका मिलता है।

निजी अनुभवों से सीखना

'छोटे और बड़े उद्योग' शीर्षक अध्याय पढ़ाते समय वे बच्चों को पास के पारले-जी और जिंदल कारखानों में ले गईं। कारखानों को देखने के बाद बच्चों ने स्वयं बड़े और छोटे उद्योग की विशेषताओं और अन्तरों को सूचीबद्ध किया। प्रिंटिंग प्रेस/मीडिया के बारे में पढ़ाते समय एक अन्य कक्षा को पुस्तकों के कारखाने में ले जाया गया। नागरिकशास्त्र और सामान्य ज्ञान का अध्ययन करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों से एक विषय चुनकर अपने गाँव में सर्वेक्षण करने के लिए कहा। सर्वेक्षण के विषय ऐसे थे जो ज़्यादातर उनके गाँव में मौजूद मुद्दों से या उनके बारे में लोगों के दृष्टिकोण या जनसांख्यिकीय संरचनाओं और पंचायत के कामकाज से सम्बन्धित थे। इन सर्वेक्षणों को कक्षा में रखा गया और यह देखा गया कि बच्चे अपने खाली समय में अपने सहपाठियों के साथ इन सर्वेक्षणों पर चर्चा करते थे।

स्वतंत्र और खोजपूर्ण अधिगम

सुश्री जोशी ने 45 मिनट की अवधि में दो कक्षाओं के बीच बारी-बारी से काम किया,दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों ने दिए गए कार्य को जारी रखा। सुश्री जोशी ने लगभग 15 मिनट में एक अवधारणा (विभिन्न प्रकार के उद्योग) पढ़ाई और बाद में उन्होंने बच्चों को समूहों में विभाजित किया और उन्हें एक ऐसा कार्य दिया जो इस अवधारणा को उनके सन्दर्भ से जोड़ता हो (आपने अपने गाँव में जितने उद्योग देखे हों, उन सभी पर विचार करके उन्हें अपनी सीखी हुई श्रेणियों में वर्गीकृत करें)। सम्भव है कि जिस तरह के कार्य बच्चों को दिए गए थे, उससे उनकी रुचि जाग्रत हुई हो और वे शिक्षक के कक्षा में न होने पर भी कार्य करने के लिए प्रेरित महसूस करते हों। बच्चों को स्वतंत्र रूप से अवधारणा की खोज के लिए बहुत स्वतंत्रता और अवसर दिए गए और बच्चों ने उसका उपयोग ख़ुशी के साथ किया।[ii]

आकलन इस प्रकार करें जिसमें सीखने की गति और शैलियों में अन्तर का ध्यान रखा गया हो

यह निष्कर्ष निकालना कि 'यह बच्चा सीखने में ख़राब है या नहीं सीख सकता है' अक्सर, असामयिक आकलन या इस प्रकार के आकलन पर आधारित होता है जो बच्चे के अधिगम को पकड़ नहीं पाता है । माना कि प्रत्येक बच्चे के लिए अलग-अलग आकलन करना शायद व्यावहारिक नहीं है; स्कूलों को कुछ संरचना और मानकीकरण की आवश्यकता होती है। लेकिन यह सुनिश्चित करना भी महत्त्वपूर्ण है कि दिए गए सत्र में आकलन विभिन्न तरीक़ों से किया जाए ताकि बच्चे को कम-से-कम कुछ मात्रा में अपने अधिगम का प्रदर्शन करने का अवसर मिले। उदाहरण के लिए लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, प्रदर्शन करना और रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसी गतिविधियों का संयोजन करना।

इसके अलावा, प्रत्येक बच्चा एक अलग गति से सीखता है; सतत और व्यापक मूल्यांकन के रूप में, केवल परिणाम पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय, हर कदम पर बच्चे के सीखने की प्रगति को मापने के लिए विभिन्न प्रक्रियाएँ रखी जा सकती हैं। आगे उसी का एक उदाहरण है।

यहाँ पिथौरागढ़ के एक शिक्षक की रिपोर्ट दी गई है, जिनकी शिक्षण-विधि बच्चे की क्षमता और गति पर केन्द्रित थी। प्रत्येक कक्षा के लिए एक एक्सेल शीट बनाई गई थी, जिसमें विद्यार्थियों के नाम और उस सेमेस्टर के दौरान उनके लिए निर्धारित अधिगम के कौशल लिखे हुए थे। चूँकि विद्यार्थी

विभिन्न पाठों के लिए अलग-अलग समय ले सकते हैं,इसलिए कक्षा में उन्हें इस बात की अनुमति दी गई कि वे प्रत्येक पाठ पर अपनी आवश्यकता के अनुसार समय लें। कौशल में महारत हासिल करने के हिसाब से विद्यार्थी की प्रगति को पहले सही के एक निशान, फिर दो निशान और फिर तीन निशान से दर्शाया गया। इसलिए किसी दिन विशेष को कक्षा में बच्चे ने जो कुछ किया, वह आंशिक रूप से उसके चार्ट पर निर्भर करता था।[iii]

संक्षेप में, यह याद रखना अत्यावश्यक है कि बच्चे के न सीख पाने के कई कारण हैं। बच्चे कैसे सीखते हैं इस सम्बन्ध में ख़ुद की धारणा,शिक्षण विधि कैसी है, विषय-वस्तु और आकलन आदि के बारे में चिन्तन करने से ऐसे वातावरण की रचना की जा सकती है जिसमें बच्चे फलें-फूलें।

विद्यार्थी का नाम	A-Z	फूलों के नाम	फलों के नाम	महीने	सम्बन्ध	लेखन	गिनती
राघव	✓	✓✓	✓✓	✓	✓✓	✓	✓
नेहा	✓	✓✓	✓	✓✓	✓	✓✓	✓✓

[i] *https://practiceconnect.azimpremjiuniversity.edu.in/a-teacher-transformed-through-training/*
[ii] *https://practiceconnect.azimpremjiuniversity.edu.in/teacher-as-the-epicentre-for-change/*
[iii] *https://practiceconnect.azimpremjiuniversity.edu.in/integrating-schools-into-social-fabric-of-community/*

References

Holt, J. C., & Fromme, A. (1964). How children fail (Vol. 5). New York: Pitman.

https://practiceconnect.azimpremjiuniversity.edu.in

रितिका गुप्ता अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में व्याख्याता हैं। वे एक मनोवैज्ञानिक और कला-आधारित थैरपिस्ट हैं। वे विशेष तौर से बच्चों के लिए मानसिक कल्याण के लिए निवारक और उसे प्रोत्साहित करने के काम में रुचि रखती हैं। उनकी रुचि के अन्य क्षेत्र इस प्रकार हैं - चिन्तनशील शिक्षणशास्त्र, स्कूलों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम का एकीकरण और व्यक्तित्व पर शिक्षा का प्रभाव। उनसे ritika.gupta@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है । **अनुवाद :** नलिनी रावल